श्री दत्तात्रय महिमा

"ॐ साईं अवधूतेश्वराय नमः"

श्री दत्तात्रेय महिमा

आनन्ददाता देव देवः ॥ भज दिन रात रे आदि गुरु दत्तात्रेय ॥ मेरे मन भात रे आदि गुरु दत्तात्रेय ॥ देवी देव गात रे आदि गुरु दत्तात्रेय ॥ सोई पितु मात रे आदि गुरु दत्तात्रेय ॥ सदा हमरे साथ रे आदि गुरु

दत्तात्रेय ।। ब्रह्म साक्षात् रे आदि गुरु दत्तात्रेय ।।
ॐ श्री दत्तात्राय नमः ।।१ ।। ॐ श्री त्रैमूर्तियाय
नमः ।। जिन दत्तात्रेय गुण गाये ।। तिन उल्टे
लेख मिटाये ।। जिन दत्त को सीस नवाया ।।
तिन कबहुँ न लागे माया ।। जिन दाता को
है जाना ।। तिन अपना आप पहचाना ।। जिन
दत्तात्रेय अपनायें ।। तिन के बलि बलि हम
जायें ।। जिन दत्त को सदा आराधा ।। तिन
कबहुँ न होये बाधा ।। जिन दाता को मन

दीना ॥ तिन जीवन का रस लीना ॥ जिन दत्तात्रेय शरण आये ॥ तिन मन के भ्रम मिटाये ॥ जिन दत्त की कीनी पूजा ॥ तिन इक बिन दिखे न दूजा ॥ जिन दाता में मन राखा ॥ तिन आतम् अमृत चाखा ॥ जिन साईं दत्त इक माना ॥ तिन पायो सत्गुरु नामा ॥ जै जै प्रभु पूरण कामा ॥ जय साईं दत्त भगवाना ॥ ॐ श्री दत्त जै साईं दत्त ॥२ ॥
लिखने वाला कौन है मनुवा पहिले जान ॥

लिखें लिखायें आप वह श्री दाता भगवान ॥३ ॥ ॐ श्री अवधूत प्रभुआय नमः ॥ नमो नमो दत्तात्रेय आदि गुरु भगवान ॥ नमो नमो अवधूत प्रभु महिमा तेरी महान ॥ सभी भरोसे छोड़ के शरण पड़ा मैं तोर ॥ तुझ में ही मिल जाऊँ मैं ना मेरा ना मोर ॥ माया के भीतर तुम्ही बसते सच्चिदानन्द ॥ जो तुझ को तन मन भजें पावें परमानन्द ॥ तुम तो सचमुच हो प्रभु करुणा के भण्डार ॥ इस

माया से परम् पिता कर दीजो मोहे पार ॥ पल पल में गिर जाऊँ मैं निर्बल हूँ मैं नाथ ॥ बच्चे की रक्षा करो सदा रहो मेरे साथ ॥ ॐ श्री अनुसूयानन्दनाय नमः ॥४ ॥ जै जै जै अत्रेय ऋषि जै अनुसूया मात ॥ इनके प्यारे लाल पर सब जग वारी जात ॥५ ॥ ॐ श्री आनन्ददाताय नमः ॥ हे प्यारे अवधूत पिता हम शरण तुम्हारी आये ॥ माया के इस जाल से दीजो हमें छुड़ाये ॥ निज अपने स्वरूप का

दीजो हम को ज्ञान ॥ बिन्दु सागर में मिले
जाये देह अभिमान ॥ सदा सदा चितवन करें
अविनाशी मन माहीं ॥ माया का पर्दा हटे
घट घट दीखें साई ॥ दाता दत्त दत्तात्रेय सदा
रहें हम गात ॥ घट भीतर देखत रहें तुझ को
ही दिन रात ॥ देह के अन्दर आप ही सोयम्
रहियो व्याप ॥ जो कार्य यह देह करे सोयम्
करते आप ॥ ॐ साई दत्तात्राय नमः ॥६ ॥
ॐ श्री आदि गुराय नमः ॥ भूला भटका जीव

यह आया तुमरे द्वार ॥ हे दाता हे परम् पिता
इस का करो उद्धार ॥ अज्ञानी कुछ गुण नहीं
नीचों में हूँ नीच ॥ जल्दी मुझे बचाईये तुम
हो सब के बीच ॥ चरण कमल में हे पिता
दीजो मुझे स्थान ॥ कर्म मेरे न देखिये मैं तो
हूँ नादान ॥ पाहि पाहि दिन रात करूँ हे प्यारे
भगवान ॥ साई दाता रूप का मन में करूँ
ध्यान ॥ ऊठत बैठत हर समय बाबा को मैं
ध्याऊँ ॥ अपनेपन को छोड़ के तुझ में ही

मिल जाऊँ ॥ ॐ श्री ब्रह्मरूपाय नमः ॥७ ॥
ॐ साई सत् जै प्रभु दत्त ॥ हे प्रभु दत्तात्रेय
हम तेरे वन्दन करते हम ॥ तुम हो हमारे साईं
प्यारे अर्चन करते हम ॥ तुम ही बचाओ तुम
ही छुड़ाओ माया जकड़े हम ॥ हम हैं भिखारी
शरण तुम्हारी पड़ते हैं हरदम ॥ न बुद्धि न
विद्या हम में मूरख परम् अधम ॥ अपने आप
को पुण्य पाप को अर्पण करते हम ॥ जग
में और न दाता कोई दूजा तुमरे सम ॥ हम

अज्ञानी अति अभिमानी दूर करो यह तम ॥
सत् सत् सत् सत् ॥ दत्त दत्त दत्त दत्त ॥८॥
ॐ श्री अवधूत प्रभुआय नमः ॥ ब्रह्मा विष्णु
शिवजी मिल कर एको रूप धरायो ॥ प्रगट
भये दत्तात्रेय जग में आनन्द छायो ॥ सुन्दर
दरस पाये जब भक्तन् मन में अति हर्षायो ॥
होये दयाल कृपाल प्रभु तब ब्रह्म का भेद
बतायो ॥ ब्रह्म विद्या की घट घट में वह पावन
नदी बहायो ॥ सत् असत् का मर्‍म बता कर

सत् में सभै लगायो ।। जा पर होये दयाल
प्रभु तिन देह का भाव मिटायो ।। सत् स्वरूप
दियो तिन बासा आतम् बोध करायो ।।
आतमदर्शी सतगुरु ने मोहे स्वयम् आप
बतायो ।। कलयुग में अवधूत प्रभु श्री साईनाथ
कहायो ।। ॐ श्री आनन्ददाताय नमः ।।९ ।।
ॐ श्री आदि गुराय नमः ।। त्रिभुवन में त्रिमूर्ति
सुन्दर रेहो बिराज ।। हम जीवों पर दया करो
दत्त गरीब निवाज़ ।। त्रिमूर्त ने जगत् में धारे

तीन स्वरूप ॥ सत्नाम सत्संगती सत्गुरु परम् अनूप ॥ भक्ति भक्त भगवान हैं त्रैमूर्त के नाम ॥ नमो नमो दत्तात्रेय सुखदायक सुखधाम ॥ स्वप्न जाग्रति नींद में एको ही अहम् ॥ जान लियो त्रिमूर्ति तीनों में इक सम ॥ त्रिमूर्ति के तीन भेद जीव ब्रह्म और माया ॥ माया शक्ति ब्रह्म की जीव ब्रह्म की छाया ॥ ॐ श्री त्रैमूर्तियाय नमः ॥१० ॥ ॐ श्री दत्तात्राय नमः ॥ जय जय जय जय आदि

गुरु सम्मति दीजो मोहे ॥ देखूँ प्रभु दत्तात्रेय
दूजा रहे न कोये ॥ जय जय जय त्रिलोकपति
हे त्रिभुवन के नाथ ॥ नमो नमो अवधूत पिता
हम सदा रहें तेरे हाथ ॥ गुरु मूरत देखत रहूँ
सर्व जगत् के माहीं ॥ जो हुआ जो हो रहा
कारण दाता साईं ॥ असंख्य जीव हैं तर गये
ले के तेरो नाम ॥ हम को निर्मल ज्ञान दो
भक्ति दो निष्काम ॥ गुरुनाथ की महिमा को
जानत है संसार ॥ आदि अनन्त अनादि ईश्वर

दाता अपरम्पार ॥ ॐ श्री ब्रह्मरूपाय नमः ॥११ ॥ सदा सदा करते रहो आतम् को अनुभव ॥ श्री मुख से दाता कहें स्वयम्भव स्वयम्भव स्वयम्भव ॥१२ ॥ ॐ साई सत् जै प्रभु दत्त ॥ आज विधाता ने मेरी माई सोये भाग्य जगायो ॥ जन्म जन्म के भूले जन से सत्गुरु आन मिलायो ॥ दाता के मैं दर्शन पायो जन्म सफल कर लीनो ॥ गुरु की वाणी सुनते ही मैं मार्ग दर्शन कीनो ॥ दो लोचन

से फूट पड़ी पावन गंगा की धारा ।। हृदय
व्याकुल होकर गाये साईं नाम अपारा ।। दाता
होए दयाल तो मो को दीना निर्मल ज्ञान ।।
झिलमिल झिलमिल करती ज्योति का ही अन्तर
ध्यान ।। ईश्वर को अब मैंने जाना स्वयम् अपना
आप ।। देख ल्यो हे मेरी माई सत्गुरु का
प्रताप ।। ॐ श्री अनुसूयानन्दनाय नमः ।।१३ ।।
ॐ श्री अवधूत प्रभुआय नमः ।। धन्य धन्य
दत्तात्रेय पूरण पुरुष विधाता ।। नौ नाथ तुमरो

यश गावें सत्‌बुद्धि के दाता ॥ तेरी महिमा गावें सुर नर गावें सब ही सिद्ध ॥ घट में तुझ को अनुभव कर के ध्यान लगावें बुद्ध ॥ जा ने जिस जा सिद्धि पाई गुरु दया से पाई ॥ तेरी उपमा सब ग्रन्थों ने युग युग में है गाई ॥ सब के भीतर तुम ही रमते तुझ बिन कोए न दूजा ॥ ज्ञानी ध्यानी घट में करते निशदिन तुमरी पूजा ॥ दाता सिमरन करने से ही छूटे सभी निराशा ॥ जो भी शरण तुम्हारी आये

पूरण होये आशा ॥ ॐ साई दत्तात्राय नमः ॥१४ ॥ आनन्ददाता देव देवः ॥ दत्तोहम् दत्तोहम् दत्तोहम् दत्तोहम् ॥ शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम् ॥१५ ॥ जै जै जै अनुसूयानन्दन भक्तों के आधार ॥ जै जै प्रभु दत्तात्रेय सुख सागर सुख सार ॥ ॐ श्री आदि गुराय नमः ॥१६ ॥ आदि गुरु की महिमा सोयम् गुरु दया ने गाई ॥ भक्तों के हित कारण दाता स्वयम् आप सुनाई ॥ पल पल

आदि गुरु अपनाओ छोड़ो सब ही धर्मा ।।
सभी स्यानप तज के भाईयों पड़ो गुरु की
शरणा ।।१७ ।।

।। आनन्ददाता देव देवः ।।

"ॐ श्री साई"